

औकारावसाना वर्णाः स्वरसंज्ञाः स्युः । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
लृ लृ ए ऐ ओ औ ॥४॥

एक-द्वि-त्रिमात्रा ह्रस्व-दीर्घ-प्लुताः ।१।१।५॥

मात्रा कालविशेषः । एक-द्वि-त्र्युच्चारणमात्रा औदन्ता वर्णा यथासंख्यं
ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतसंज्ञाः स्युः । अ इ उ ऋ लृ , आ ई ऊ ऋ लृ , ए ऐ ओ
औ , आ ३ ई ३ ऊ ३ इत्यादि ॥५॥

अनवर्णा नामी ।१।१।६॥

अवर्णवर्जा औदन्ता वर्णा नामिसंज्ञाः स्युः । इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ
ए ऐ ओ औ ॥६॥

लृदन्ताः समानाः ।१।१।७॥

लृकारावसाना वर्णाः समानाः स्युः । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ
॥७॥

ए-ऐ-ओ-औ सन्ध्यक्षरम् ।१।१।८॥

‘ ए ऐ ओ औ ’ इत्येते वर्णाः सन्ध्यक्षराणि स्युः ॥८॥

अं-अः अनुस्वार-विसर्गौ ।१।१।९॥

अकारावुच्चारणार्थौ । ‘ अं ’ इति नासिक्यो वर्णः ‘ अः ’ इति च कण्ठ्यः
यथासंख्यम् ‘ अनुस्वार-विसर्गौ ’ स्याताम् ॥९॥

कादिर्व्यञ्जनम् ।१।१।१०॥

‘ कादिर्वर्णो ह्रपर्यन्तो व्यञ्जनं स्यात् । क ख ग घ ङ , च छ ज झ ञ
, ट ठ ड ढ ण , त थ द ध न , प फ ब भ म , य र ल व , श
ष स ह ॥१०॥

अपञ्चमान्तस्थो धुट् ।१।१।११॥

वर्गपञ्चमा-ऽन्तस्थावर्जः कादिर्वर्णो धुट् स्यात् । क ख ग घ , च छ ज
झ , ट ठ ड ढ , त थ द ध , प फ ब भ , श ष स ह ॥११॥

पञ्चको वर्गः ।१।१।१२॥

कादिषु वर्णेषु यो यः पञ्चसंख्यापरिमाणो वर्गः स स वर्गः स्यात् । क ख
ग घ ङ , च छ ज झ ञ , ट ठ ड ढ ण , त थ द ध न , प फ ब